सारणी III.11: बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय आस्तियां - प्रकारानुसार वर्गीकृत

(राशि करोड़ रुपये)

आस्ति का प्रकार	बकाया राशि (मार्चांत)		
	2002	2003	2004
1	2	3	4
1. ऋण और जमाराशियां	95,794	97,657	1,08,527
जिनमें से:			
अनिवासियों को ऋण*	5,218	4,634	4,281
निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण **	19,561	36,859	44,079
निवासियों द्वारा अनिवासियों पर आहरित बकाया निर्यात बिल	15,190	19,242	20,609
नास्ट्रो शेष राशियां @	55,642	36,708	39,282
2. ऋण प्रतिभूतियों के धारण	952	1,027	858
3. अन्य आस्तियां @@	4,629	5,890	6,380
कुल अंतर्राष्ट्रीय आस्तियां	**1,01,375**	**1,04,574**	**1,15,765**

* अनिवासी जमाराशियों में से दिये गये रुपया ऋण और विदेशी मुद्रा (एफसी) ऋण शामिल है।

** इसमें एफसीएनआर(बी) जमाराशियों, पीसीएफसी में से दिये गये ऋण, भारत स्थिति बैंकों को दिये गये विदेशी मुद्रा ऋण और के पास विदेशी मुद्रा जमाराशियां आदि शामिल हैं।

@ अनिवासी बैंकों के पास रखी मीयादी जमाराशियों (विदेश में धारित एफसीएनआर निधियों सहित) में शेष राशि सहित।

@@ भारतीय बैंकों की विदेशी शाखाओं/सहयोगी संस्थाओं को आपूर्ति की गयी पूंजी और उनसे प्राप्य लाभ तथा अन्य अवर्गीकृत अंतर्राष्ट्रीय आस्तियां।

मुद्रा उधार में वृद्धि बैंकों को विदेशी उधारों को प्राप्त करने के लिए दी गई अधिक नमनीयता के कारण हो सकती है। जनवरी 2003 में रिज़र्व बैंक ने निर्यातकर्ताओं को विदेशी मुद्रा/निर्यात बिल पुनर्भनाई (पीसीएफसी/इबीआर) में लदान-पूर्व ऋण प्रदान करने के लिए बैंकों को विदेशी मुद्रा निधि प्राप्त करने की अधिक नम्यता (छूट) प्रदान की। बैंकों को ऐसे ऋण प्रदान करने के लिए घरेलू विदेशी मुद्रा बाजार में खरीद-बिक्री स्वैप के जरिए सृजित निधि के उपयोग की अनुमति दी बशर्ते रिजर्व बैक द्वारा अनुमोदित कुल अंतराल सीमा के अधीन हो। अनिवासियों द्वारा धारित बैंकों के एडीआर/जीडीआर में भी काफी प्रसार हुआ। एडीआर/जीडीआर के अंतर्गत प्रवाह में प्रसार निवेश परिवेश में सुधार तथा विदेशी निधि की निम्नतर लागत के कारण हो सकता है। मुद्रा संरचना की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय देयताएं या तो अ.डा. में या भारतीय रुपये में थीं जिसका कारण था रुपया आनिवासी जमाराशि की बड़ी मात्रा।

3.37 दूसरी ओर, बैंकों की अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों में 2002-03 के दौरान 3.2 प्रतिशत की मामूली वृद्धि होकर वे मार्च 2003 के अंत में 104,574 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गई। जो 2003-04 के दौरान और बढ़कर 10.7 प्रतिशत (लगभग 11,000 करोड़ रुपये) बढ़ी (सारणी III.11)। कुल अंतर्राष्ट्रीय आस्तियों के लगभग 93 प्रतिशत के साथ ऋण और जमाराशि प्रमुख घटक रहे । ऋण तथा जमाराशि घटक के संबंध में 2003-04 में निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो 2002-03 के दौरान हुई 88 प्रतिशत की वृद्धि के ऊपर था। रिपोर्टकर्ता बैंकों के नास्ट्रो शेष जोकि देशी निवासी की विदेशी मुद्रा के प्रति तरजीह दर्शाते हैं, 2003-04 के दौरान मामूली रूप से बढ़े जबकि 2002-03 में 34 प्रतिशत की कमी हुई थी।

3.38 मार्च 2004 के अंत में, तत्काल देश जोखिम आधारित बैंकों के समेकित दावे मुख्यतः अमरीका, हाँगकाँग और इग्लैंड पर संकेंद्रित थे जोकि कुल अंतर्राष्ट्रीय दावों का लगभग 54 प्रतिशत थे (सारणी III.12)। अवशिष्ट अवधिपूर्णता के अनुसार बैंकों के विभिन्न देशों पर समेकित अंतर्राष्ट्रीय दावों के वितरण से यह प्रकट होता है कि बैंकों ने '6 माह तक' के अल्पावधि प्रयोजनार्थ निवेश/उधारों को तरजीह दी जिनका कुल दावों में अंश 2003-04 के दौरान 4.5 प्रतिशत अंक बढ़कर 70.2 प्रतिशत हो गया (सारणी III.13)। जहां तक इन दावों के क्षेत्रीय वितरण को संबंध है, रिपोर्टकर्ता बैंकों ने 'बैंक' क्षेत्र और 'गैर-बैंक निजी' क्षेत्र में निवेश करने / उन्हें उधार देने की तरजीह दी।

सारणी III.12: बैंकों के भारत से इतर देशों पर समेकित अंतर्राष्ट्रीय दावे

(सीबीएस विवरण पर आधारित - निकटवर्ती देश जोखिम आधार)

(करोड़ रुपये)

देश	निम्नलिखित के अंत में बकाया राशि		
	जून 2002	मार्च 2003	मार्च 2004
1	2	3	4
कुल समेकित अंतर्राष्ट्रीय दावे	**94,644 (100.0)**	**91,061 (100.0)**	**78,124 (100.0)**
जिनमें से:			
संयुक्त राज्य अमरीका	20,940 (22.1)	20,446 (22.5)	19,915 (25.5)
हांग-कांग	14,317 (15.1)	13,416 (14.7)	12,353 (15.8)
ब्रिटेन @	12,140 (12.8)	12,779 (14.0)	9,879 (12.6)
जर्मनी	3,689 (3.9)	3,281 (3.6)	4,593 (5.9)
सिंगापुर	6,080 (6.4)	5,776 (6.3)	3,729 (4.8)
इटली	3,362 (3.6)	2,832 (3.1)	1,735 (2.2)
फ्रांस	2,582 (2.7)	2,461 (2.7)	1,684 (2.2)

@ गुर्बसी इस्ली ऑफ मॅन और जर्सी को छोड़कर

टिप्पणियां : 1. कोष्ठकों में दिए गए आंकडे कुल से प्रतिशत हैं।

2. देशवार समेकित बैंकिंग सांख्यिकी को मार्च 2002 तक अंतिम जोखिम देश के आधार पर संकलित की गई है। जून 2002 में समाप्त तिमाही से बाद के डेटा के लिए निकटवर्ती देश जोखिम आधारित वर्गीकरण अपनाया गया है। अतः मार्च 2002 के बदले जून 2002 हेतु आंकड़ लिए गए हैं।

वाणिज्य बैंक सर्वेक्षण

3.39 रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां मजबूत पूंजी आगमों से निरंतर बढ़ती रहीं । सरल चलनिधि स्थिति को प्रतिबिंबित करते हुए रिज़र्व बैक की निवल देशी आस्तियों में गिरावट की प्रवृत्ति रही। बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि में 2003-04 की पहली तिमाही में उछाल आया जोकि बैंकों द्वारा वर्षांत लक्ष्य प्राप्ति के लिए जमा राशि उभारने के कारण हुआ। बैंकों ने अपने नास्ट्रो शेष कम किए और निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण देने के लिए विदेशी उधार लिए। ब्याज दरें अंतर्राष्ट्रीय दरों से संगत की जाने के कारण एफसीएनआर (बी) योजना के तहत निवल जावक दर्ज हुई। वाणिज्यिक क्षेत्र से ऋण की कम मांग और तुलनात्मक रूप से सस्ती विदेशी निधि की उपलब्धता के कारण, जून 2003 के मध्य में सीआरआर में कटौती

सारणी III.13: बैंकों के समेकित अंतर्राष्ट्रीय दावों का परिपक्वता (अवशिष्ट) वर्गीकरण - बकाया राशि

(समेकित बैंकिंग सांख्यिकी विवरण पर आधारित - निकटवर्ती देश जोखिम आधार)

(करोड़ रुपये)

अवशिष्ट परिपक्वता	निम्नलिखित के अंत में बकाया राशि		
	जून 2002	मार्च 2003	मार्च 2004
1	2	3	4
6 महीने तक	61,842 (65.3)	59,831 (65.7)	54,879 (70.2)
6 महीने - एक वर्ष	10,502 (11.1)	6,412 (7.0)	3,798 (4.9)
एक वर्ष - दो वर्ष	3,916 (4.1)	4,247 (4.7)	2,872 (3.7)
दो वर्षों से अधिक	14,197 (15.0)	18,861 (20.7)	14,948 (19.1)
अनाबंटित	4,185 (4.4)	1,710 (1.9)	1,627 (2.1)
जोड़	**94,644 (100.0)**	**91,061 (100.0)**	**78,124 (100.0)**

टिप्पणियाः 1. अनाबंटित अवशिष्ट परिपक्वता में बैंक शाखाओं से उपलब्ध न करायी गयी परिपक्वता सूचना शामिल हैं।

2. कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े जोड़ की तुलना में प्रतिशत है।

3. देशवार समेकित बैंकिंग सांख्यिकी मार्च 2002 तक अंतिम जोखिम वाले देश के आधार पर संकलित की गयी है। जून 2002 की समाप्त तिमाही से ये आंकड़े तत्काल प्रथम जोखिमवाले देश के आधार पर संकलित है। अतः मार्च 2002 के बदले आंकड़े जून 200 हेतु लिए गए हैं।

के बावजूद 2003-04 की प्रथम तिमाही में अतिरिक्त चलनिधि बैंक प्रारक्षित निधि के विस्तार में परिवर्तित हुई। उधार कार्यक्रम मजबूत होने और रिज़र्व बैंक पर्याप्त खुले बाजार के विक्रयों में लग जाने के कारण बैंकों का गिल्ट संविभाग तेजी से बढ़ा। खाद्यान्न ऋण की चुकौती और उद्योगों से तुलनात्मक रूप से दुर्बल मांग के कारण वाणिज्यिक क्षेत्र को ऋण का स्तर कम रहा। कम ऋण उठाव के कारण बैंकों ने गैर-एसएलआर निवेशों के माध्यम से वाणिज्यिक क्षेत्र को अपना ऋण जोखिम बढ़ाया। आरआइबी की 1 अक्तूबर 2003 को शोधन की आशा में कुछ बैंकों ने दूसरी तिमाही में नास्ट्रो शेष बनाए। निवासियों के विदेशी मुद्रा ऋण बढ़ने के साथ-साथ बैंकों के विदेशी उधारों में भी तेजी आयी। एफसीएनआर(बी) योजना निरंतर आधिक्य दर्ज करती रही। अतिरिक्त चलनिधि एलएएफ नीलामियों में अवशोषित होने के कारण निवल बैंक प्रारक्षित निधि में गिरावट आयी।

3.40 2003-04 की तीसरी तिमाही के दौरान वास्तविक कार्यकलाप में सुधार के अनुरूप जमा संग्रहण में सुधार हुआ। यह अगस्त माह से गैर-ज्द्य मांग में मजबूती से भी परिलक्षित हुआ। आरआइबी की अधिकांश शोधन आय देशी मुद्रा/अनिवासी जमाराशि योजनाओं में जाने के कारण बैंकों की नास्ट्रो स्थिति ठीक रही। चरण I पूंजी से संबंधित उधार सीमा में उदारीकरण के प्रतिसाद में बैंकों के विदेशी उधार बढ़ गए। बैंक प्रारक्षित निधि में भारी बढ़त हुई जोकि सरकार द्वारा निधि की मांग में कमी आने से उत्पन्न अतिरिक्त चलनिधि से प्रेरित थी। वित्तीय संस्थाओं से मांग/ मीयादी उधारों में मंदी से मांग/नोटिस मुद्रा बाजार में गैर-बैंक उधारों में और भी कमी आयी। अंतिम तिमाही में सरकारी प्रतिभूतियों में बैंकों के निवेश में वृद्धि ने एलएएफ के तहत हुए रिपो परिचालनों को प्रतिबिंबित किया। निवासियों के विदेशी मुद्रा ऋणों में वृद्धि सभी तिमाहियों में स्थायी रही। इसके साथ-साथ अन्य कारकों जैसे ओएनजीसी विनिवेश के कारण आगम, एफआइआइ आगम और विदेशी मुद्रा अर्जक विदेशी मुद्रा (इइएफसी) खाता के अंतर्गत आगम के कारण मांग जमाराशियों में वृद्धि जारी रही। मीयादी जमाराशियों में भी वृद्धि देखी गयी जो मुचुअल फंड को बैंक जमाराशि की ओर रख तथा स्टॉक बाज़ार में गिरावट के कारण मुचुअल फंड को बैंक जमाराशियों में अस्थायी रुप से रखने से परिलक्षित होता है। अंतिम तिमाही में सरकारी प्रतिभूतियों में बैंकों के निवेश में वृद्धि एलएएफ के अंतर्गत बनाए (रेपो परिचालन को दर्शाता है) सभी तिमाही में निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण में वृद्धि एकसमान बनी रही।बैंकों के पूंजी खाते में भारी वृद्धि ने उनका निवेश घट-बढ़ प्रारक्षित निधि निर्माण और पूंजी पर्याप्तता अनुपात संबंधी विवेकपूर्ण दिशा निर्देशों का पालन दर्शाया।

3.41 2004-05 की पहली दो तिमाही में कम पूंजी आगम के कारण जमा वृद्धि में कमी आयी। 2004-05 की पहली तिमाही में खाद्य-ऋण में वृद्धि हुई जो उच्चतम खरीद को दर्शाता है जबकि दूसरी तिमाही में मौसमी गिरावट देखी गयी थी। गैर-खाद्य ऋण के उठाव में भी निरंतर वृद्धि देखी गयी जो अंशतः औद्योगिक कार्यकलाप के सुदृढ़ीकरण को दर्शाता है। ब्याज दरों में वृद्धि तथा ऋण मांग के पुनरुत्थान के मद्देनजर सरकारी पत्रों में निवेश में गिरावट आयी (सारणी III.14 और परिशिष्ट सारणी III.10)।

सारणी III.14: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के परिचालन

(करोड़ रुपये)

मदें	19 मार्च 2004 के अंत में बकाया	2002-03				2003-04				2004-05	
		ति.1	ति. 2	ति. 3	ति.4	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
निवासियों की कुल जमाराशियां	14,29,080	52,675	32,201	37,518	23,773	65,724	32,455	60,154	82,398	56,865	23,402
मांग जमाराशियां	2,25,022	4,717	-4,535	11,654	5,405	11,366	-5,950	18,496	30,822	-12,155	4,260
मीयादी जमाराशियां	12,04,058	47,958	36,735	25,864	18,368	54,359	38,406	41,658	51,577	69,020	19,142
वित्तीय संस्थाओं से मांग/मीयादी निधीयन	24,670	6,448	792	227	2,142	2,526	2,253	4,822	2,431	5,409	541
सरकार को ऋण	6,54,758	47,047	18,716	22,680	23,798	35,534	45,333	18,342	32,133	40,056	-10,392
वाणिज्य क्षेत्र को ऋण	10,02,479	22,805	20,342	39,481	27,881	10,400	5,466	40,775	54,800	35,075	42,679
खाद्य ऋण	35,961	7,030	-7,645	-1,415	-2,468	586	-12,601	-1,113	-391	8,562	-6,335
खाद्येतर ऋण	8,04,824	7,522	19,945	32,541	39,439	3,091	15,186	48,992	57,819	29,523	46,715
प्राथमिक व्यापारियों को ऋण	1,946	2,854	5,837	959	-5,886	5,557	-779	-4,649	-2,276	-678	977
अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	22,830	-1,233	-459	-965	-306	-13	-407	50	-928	-184	3,918
अन्य निवेश (गैर एसएलआर प्रतिभूतियों में)	1,36,918	6,633	2,664	8,361	-2,898	1,178	4,068	-2,505	577	-2,148	-2,596
वाणिज्य बैंकों की निवल विदेशी मुद्रा आस्तियां	-58,531	2,748	-15,136	-8,992	-9,120	1,235	1,855	6,815	196	-7,711	4,233
विदेशी मुद्रा आस्तियां	33,833	4,718	-14,412	-7,955	-5,345	-377	3,264	-4,066	3,931	-3,507	3,320
अनिवासी विदेशी मुद्रा प्रत्यावर्तनीय सावधि जमाराशियां	75,336	1,655	669	-265	-403	-2,103	-1,273	-13,916	122	1,139	-169
समुद्रपारीय विदेशी मुद्रा उधार	17,028	315	55	1,302	4,178	491	2,682	3,035	3,613	3,065	-744
निवल बैंक प्रारक्षित निधियां	76,895	-2,943	11,055	-1,619	-5,700	20,149	-14,272	6,394	-1,199	10,392	-3,621
पूंजी खाता	1,03,108	15,152	-742	-1,815	1,625	15,349	-1,826	2,464	581	16,199	119
अन्य मदें (निवल)	1,18,743	-4,618	2,726	15,619	9,318	-16,283	5,500	4,887	520	-661	8,837

टिप्पणी : 1. ति.1 जून को समाप्त तिमाही है और यही क्रम आगे है।
2. आंकड़े प्रत्येक तिमाही के सूचना के अंतिम शुक्रवार से संबंधित हैं।
3. मई 2002 - अप्रैल 2003 के दौरान जमाराशियों को विलयन के पूर्ण प्रभाव के लिए समायोजित किया गया हैं वहीं ऋण कोइसी के प्रारंभिक प्रभाव के लिए समायोजित किया गया है।

बैंकों की आस्तियों और देयताओं की अवधिपूर्णता स्थिति

3.42 वाणिज्यिक बैंकों की आस्तियों और देयताओं के अवधिपूर्णता स्वरूप ने कारोबार विस्तार, चलनिधि प्रबंध, निधि-लागत, आस्तियों पर प्रतिलाभ, आस्ति गुणवत्ता और औद्योगिक स्थिति परिवर्तन में जोखिम उठाने की तैयारी संबंधी बैंकों की विभिन्न चिंताओं का संयोजन दर्शाया। सामान्य रूप से जमाराशि, उधार, अग्रिम और निवेश सहित तुलन-पत्र के मुख्य घटकों ने अवधिपूर्णता के दायरे के आर-पार 36-रेखीय संविभाग स्वरूप पार कर लिया। इतनाही नहीं, सभी बैंक समूहों के लिए ऋण और अग्रिमों का अवधिपूर्णता स्वरूप जमाराशि स्वरूप से समरूप रहा। तथापि, बैंकों के जमा राशि और निवेश स्वरूप के अवधिपूर्णता स्वरूप में कुछ भिन्नता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक अपने निवेश का बड़ा भाग उच्च अवधिपूर्णता समूह, विशेषतः पांच वर्ष से अधिक अवधिपूर्णता में रखते हैं जबकि निजी और विदेशी बैंक अपने निवेश का बड़ा भाग एक वर्षीय अवधिपूर्णता समूह में रखते हैं। विभिन्न बैंक समूहों हेतु निवेश का अवधिपूर्णता संयोजन एएफएस और एचएफटी में निवेश का संयोजन कहा जाता है (सारणी III.15)।

बैंक स्टॉक मूल्य

3.43 फरवरी 2000 से मंदा रहा शेयर बाजार वित्तीय वर्ष 2003-04 के दौरान तेज रहा। मई 2003 के अंत में शुरू हुई तेजी फरवरी 2004 तक अबाध गति से जारी रही। इस तेजी के पीछे विभिन्न कारण थे जिनमें शामिल है अच्छा मानसून, उत्साहवर्धक कंपनी परिणाम, मजबूत समष्टिगत आर्थिक आधार, संस्थागत निवेशकों (विशेषतः विदेशी संस्थागत निवेशकों) द्वारा भारी निवेश, अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में सकारात्मक प्रवृत्ति और क्षेत्र विशेष के कारक। मार्च 2004 से जुलाई 2004 के दौरान कई घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय कारणों से शेयर बाजार में तीव्र गिरावट देखी गयी जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित है : बाजार सहभागियों द्वारा वर्षांत को ध्यान में रखकर लाभ कमाना, कतिपय आकर्षक आइपीओ के कारण प्राथमिक बाजार में निधियों का प्रवाह, आम चुनाव के परिणाम तथा सुधार प्रक्रिया पर इसके प्रभाव की अनिश्चितता, संस्थागत निवेश में मंदी, घरेलू मुद्रास्फीति में कमी तथा कच्चे तेल की बढ़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय कीमतें। तथापि, तदनंतर पुनरूत्थान भी देखा गया।

3.44 2003-04 के दौरान बाजार में उछाल के अनुरूप बैंकिंग क्षेत्र के स्टाक में भी उछाल दिखा। 2003-04 के दौरान बैंकेक्स बीएसई सेंसेक्स के लगभग समरूप ही रहा। (चार्ट III.4(क)

सारणी III.15: चुनिंदा देयताओं/आस्तियों की बैंक समूहवार परिपक्वता रूपरेखा

(प्रतिशत)

देयताएं / आस्तियां	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के पुराने बैंक		निजी क्षेत्र के नए बैंक		विदेशी बैंक	
	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04
1	2	3	4	5	6	7	8	9
I. जमाराशियां	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
क) एक वर्ष तक	34.2	34.4	49.4	51.2	53.4	50.7	53.4	46.2
ख) एक वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक	44.7	37.8	39.2	37.1	41.9	42.9	42.6	45.6
ग) तीन वर्ष से अधिक और पांच वर्ष तक	9.4	11.7	5.3	4.4	1.9	4.0	3.9	0.7
घ) पांच वर्ष से अधिक	11.7	16.1	6.1	7.3	2.8	2.4	0.1	7.5
II. उधार राशियां	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
क) एक वर्ष तक	74.9	82.4	82.9	89.7	45.7	46.4	87.4	85.3
ख) एक वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक	14.9	14.0	13.2	5.3	39.2	36.4	12.4	11.9
ग) तीन वर्ष से अधिक और पांच वर्ष तक	5.5	2.6	2.1	2.8	6.6	8.3	0.0	2.5
घ) पांच वर्ष से अधिक	4.7	1.0	1.8	2.2	8.5	8.9	0.2	0.3
III.ऋण और अग्रिम	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
क) एक वर्ष तक	39.3	40.0	43.5	40.5	36.1	35.4	64.7	57.3
ख) एक वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक	35.2	33.0	36.1	36.1	29.6	31.0	22.1	16.3
ग) तीन वर्ष से अधिक और पांच वर्ष तक	11.7	12.1	8.8	10.3	12.9	12.5	5.9	7.7
घ) पांच वर्ष से अधिक	13.8	14.9	11.6	13.1	21.4	21.1	7.3	18.7
IV. निवेश	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0
क) एक वर्ष तक	12.3	10.4	18.9	18.0	44.9	45.0	46.6	45.8
ख) एक वर्ष से अधिक और तीन वर्ष तक	13.7	11.8	14.6	10.2	29.0	27.3	24.8	30.7
ग) तीन वर्ष से अधिक और पांच वर्ष तक	15.8	14.5	9.6	10.4	6.3	6.6	12.4	8.5
घ) पांच वर्ष से अधिक	58.2	63.3	56.9	61.4	19.8	21.1	16.2	15.0

स्रोत : संबंधित बैंकों के तुलन पत्र

चार्ट III.4 : बीएसई सेंसेक्स और बैंकेक्स में उतार-चढ़ाव

चार्ट III.4 (क): बीएसई सेंसेक्स और बैंकेक्स

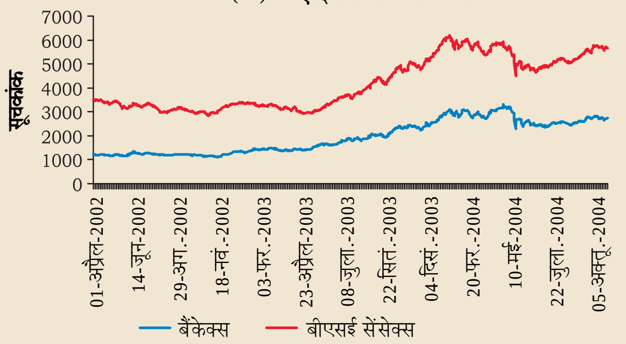

चार्ट III.4 (ख): एस एण्ड पी सी एन एक्स निफ्टी और एस एण्ड पी सी एन एक्स निफ्टी बैंक सूचकांक

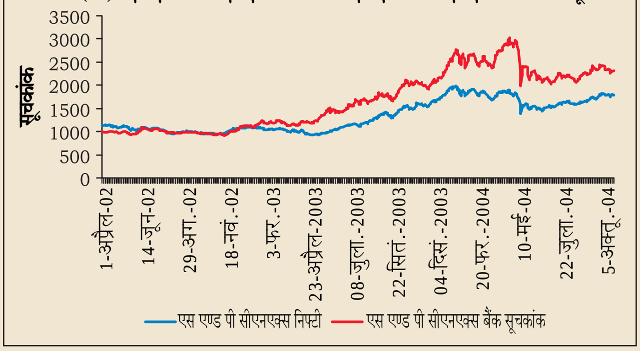

और चार्ट III.4 (ख)। अप्रैल 2004 में, बैंकेक्स ने बीएसई सेंसेक्स को पार कर लिया। तथापि मई 2004 में, आम चुनाव के बाद उपजे अनिश्चय के मद्देनजर बैंकेक्स बीएसई सेंसेक्स की तुलना में अधिक तेजी से टूटा। बैंकिंग क्षेत्र के शेयर विशेषतः 2001-02 से तेजी में रहे हैं। इस तेजी के कारणों में मई 2001 में निजी क्षेत्र के बैंकों हेतु विदेशी सीधा निवेश (एफडीआई) मानदण्डों में ढील, बैंकों के वित्तीय कार्यनिष्पादन में सुधार, ब्याज दरों में तेज गिरावट जिससे सरकारी प्रतिभूतियों के बैंकों के संविभाग का बाजार मूल्य और खज़ाना लेनदेन में बैंकों का व्याापार लाभ बढ़ा, जैसे कारकों के साथ ही बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों में प्रगति शामिल है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के विनिवेश संबंधी बाजार आकांक्षाएं और बैंकों को अधिक स्वायत्तता भी इस उछाल का कारण बनी। मई 2004 में तीव्र सुधार के बावजूद, बैंकिंग क्षेत्र के शेयरों की अंतःवर्ती मूल स्थिति मजबूत रही जोकि अधिकांश बैंकों के अच्छे वार्षिक परिणामों से सिद्ध होता है। तदनंतर बैंकिंग क्षेत्र के शेयरों में ब्याज दरों के बढ़ने की संभावना, जो बैंकों के 'अन्य आय' के जरिए आय (उपार्जन) पर दबाव डाल सकता है, की आशंका के बावजूद देशी स्टॉक बाजार की प्रवृत्तियों के अनुरूप वृद्धि हुई। नए प्रतिभूतीकरण कानून की वैधता को मान्य ठहराने वाला उच्चतम न्यायालय निर्णय जिससे बैंकिंग क्षेत्र में उच्चतर वसूली का मार्ग प्रशस्त हुआ तथा रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों के निवेश संविभाग को नियंत्रित करनेवाले नियमों में छूट जैसे कारकों ने बैंकिंग क्षेत्र के शेयरों की खरीद में रूचि उत्पन्न करने में सहायक रही।

3.45 2003-04 में बैंक शेयरों के लिए बाजार वरीयता सुदृढ़ थी जैसा कि सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बैंकों के पण्यावर्त में तीव्र वृद्धि से स्पष्ट होता है (सारणी III.16)। कुल बाजार पण्यावर्त में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पण्यावर्त का हिस्सा 2002-03 के 2.7 प्रतिशत से बढ़कर 2003-04 में 10.7 प्रतिशत हो गया। एनएसई में सूचीबद्ध सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों के स्टॉक मूल्यों में काफी वृद्धि हुई। औसत दैनिक मूल्य के संदर्भ में प्रमुख लाभप्राप्तकर्ताओं में बैंक ऑफ बड़ौदा, कनारा बैंक, कार्पोरेशन बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और पंजाब नेशनल बैंक सम्मिलित थे। एनएसई में सूचीबद्ध निजी क्षेत्र के बैंकों के स्टॉक मूल्यों में भी काफी वृद्धि हुई (सारणी III.17)। दैनिक पण्यावर्त के संदर्भ में सर्वाधिक सक्रिय शेयर भारतीय स्टेट बैंक, सिंडिकेट बैंक, आइसीआइसीआइ बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा तथा बैंक ऑफ इंडिया के थे।

सारणी III.16: एनएसई में बैंक शेयरों के पण्यावर्त के ब्यौरे

(राशि करोड़ रुपये)

श्रेणी	2002-03		2003-04	
	राशि	कुल पण्यावर्त के प्रति प्रतिशत	राशि	कुल पण्यावर्त के प्रति प्रतिशत
1	2	3	4	5
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	16,406.5	2.7	11,766.1	10.7
निजी क्षेत्र बैंक	4,262.2	0.7	22,496.5	2.0
कुल	20,668.6	3.4	1,40,112.6	12.7
कुल पण्यावर्त	**6,17,988.6**		**10,99,535.0**	

स्रोतः राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज

सारणी III.17: एनएसइ में बैंकों के शेयर का मूल्य

(औसत दैनिक अंतिम मूल्य रुपये में)

बैंक का नाम	2001-02	2002-03
1	2	3
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक		
इलाहाबाद बैंक	13.5*	21.5
आंध्र बैंक	17.0	41.1
बैंक ऑफ बड़ौदा	59.3	162.1
बैंक ऑफ इंडिया	31.2	55.2
केनरा बैंक	61.5+	119.2
कार्पोरेशन बैंक	120.9	207.0
देना बैंक	10.8	22.3
इंडियन ओवरसीज बैंक	12.9	30.4
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स	46.7	197.9
पंजाब नैशनल बैंक	56.1@	190.3
सिंडिकेट बैंक	14.6	29.8
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	20.0#	42.6
विजया बैंक	12.4	34.0
भारतीय स्टेट बैंक	250.7	469.5
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	–	290.0
स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर	–	275.3
निजी क्षेत्र के बैंक		
बैंक ऑफ राजस्थान लि.	15.3	29.0
सिटी यूनियन बैंक लि.	30.9	56.3
फेडरल बैंक लि.	87.1	188.8
जम्मू और कश्मीर बैंक लि.	95.2	281.0
कर्नाटक बैंक लि.	61.2	89.3
करूर वैश्य बैंक लि.	194.7	276.1
लक्ष्मी विलास बैंक लि.	65.9	98.4
साउथ इंडियन बैंक लि.	36.5	56.2
यूनाइटेड वेस्टर्न बैंक	22.8	28.1
वैश्य बैंक लि.	258.3	429.7
बैंक ऑफ पंजाब लि.	13.9	24.0
सेंचुरियन बैंक लि.	8.7	13.7
ग्लोबल ट्रस्ट बैंक लि.	18.9	22.0
एचडीएफसी बैंक लि.	217.6	302.2
आइसीआइसीआइ बैंक लि.	137.4	211.9
आइडीबीआइ बैंक लि.	18.9	35.9
इंडसलैंड बैंक लि.	15.9	28.8
यूटीआइ बैंक लि.	38.9	88.6

* 29 नवंबर 2002 से; + 23 दिसंबर 2002 से;
@ 26 अप्रैल 2002 से; # 24 सितंबर 2002.
टिप्पणी : दैनिक अंतिम मूल्यों का उपयोग करते हुए औसत निकाला गया है।
स्रोत : राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज

3. अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का वित्तीय कार्यनिष्पादन

3.46 2003-04 में, बैंकिंग क्षेत्र के कार्यनिष्पादन में विभिन्न क्षेत्रों में सुधार प्रदर्शित हुआ। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की लाभप्रदत्ता उच्च वृद्धि बनाये रखी गयी। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के लाभ पिछले वर्ष के सुदृढ़ कार्यनिष्पादन से काफी अधिक बढ़ गये (सारणी III.18)। परंतु, 2003-04 के दौरान आय और लाभ के वृद्धि स्रोत 2002-03 से भिन्न थे। परिचालनगत लाभ की उच्च वृद्धि मुख्य रूप से ब्याज से इतर आय (या 'अन्य आय') में भारी वृद्धि और सामान्य रूप से व्यय को उल्लेखनीय रूप से सीमित किये जाने तथा विशेष रूप से जमाराशियों पर ब्याज व्यय में गिरावट के कारण हुई थी। हालांकि ब्याज आय में न्यून वृद्धि दर्ज हुई है, फिर भी, इसका बैंकों के समग्र अर्जन में सकारात्मक योगदान रहा। बैंक समूहवार महत्तवपूर्ण वित्तीय परिशिष्ट सारणी III.11 और परिशिष्ट सारणी III.12 (क) से (छ) में दिए गए हैं।

आय

3.47 न्यूनतर ब्याज दर प्रणाली के कारण अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल आय में 2002-03 की 14 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर की तुलना में 2003-04 में 6.6 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ धीमी गति परिलक्षित हुई। उक्त धीमी आय वृद्धि सभी बैंक समूहों में पयी गयी। बैंक समूहों के बीच, विदेशी बैंक समूह में आय में वृद्धि सर्वाधिक थी, जिसके बाद सरकारी क्षेत्र के बैंकों, नये निजी क्षेत्र के बैंकों तथा पुराने निजी बैंकों का स्थान था । सरकारी क्षेत्र के कुछ बैंकों की लाभप्रदता में भी इस तथ्य के कारण सुधार हुआ कि रिजर्व बैंक ने बैंकों को ऐसी कुछ परियोजना श्रेणियों जिनके कार्यान्वयन संबंधी कार्य पूरा नहीं हुआ है और जिन्हें अधिक समय लग रहा है, के संबंध में उपचित आधार पर आय निर्धारित करने की अनुमति दी।

ब्याज आय

3.48 ऋणों और ब्याज सहित प्रमुख गतिविधियों से ब्याज आय और निवल की दृष्टि से निवेश प्रमुख घटक बने रहे जिनका अंश अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल आय का 78.4 प्रतिशत रहा। तथापि, वृद्धिशील आधार पर 2003-04 के दौरान कुल आय में ब्याज आय का अंशदान 2002-03 के 64.5 प्रतिशत की तुलना में 29 प्रतिशत रहा [चार्ट III.5]। 2003-04 में ब्याज आय की 2.4 प्रतिशत वृद्धि दर 2002-03 के 10.8 प्रतिशत की वृद्धि दर की तुलना में काफी कम थी। ब्याज आय के घटकों में अग्रिमों तथा निवेशों दोनों ही में आय 2002-03 की तुलना में 2003-04 में न्यूनतर वृद्धि दर्ज हुई।

अन्य आय

3.49 बैंकों के संविभागों के विशाखन के फलस्वरूप, गैर-ब्याज आय या 'अन्य आय' बैंकों की आय का महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है। बैंकों की कुल आय में गैर-ब्याज आय का अंश 1992-

सारणी III.18: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के महत्त्वपूर्ण वित्तीय संकेतक

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्ष	2001-02		2002-03		2003-04	
	राशि	कुल आस्तियों के प्रति प्रतिशत	राशि	कुल आस्तियों के प्रति प्रतिशत	राशि	कुल आस्तियों के प्रति प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1 आय (क+ख)	1,51,032	9.8	1,72,345	10.1	1,83,767	9.3
क) ब्याज आय	1,26,958	8.3	1,40,742	8.3	1,44,028	7.3
ख) अन्य आय	24,074	1.6	31,603*	1.9	39,739	2.0
2 व्यय (क+ख+ग)	1,39,456	9.1	1,55,268	9.1	1,61,496	8.2
क) लगा हुआ ब्याज	87,516	5.7	93,596	5.5	87,567	4.4
ख) परिचालन व्यय	33,679	2.2	38,067	2.2	43,530	2.2
जिसमें से :						
मजदूरी बिल	21,785	1.4	23,610	1.4	26,164	1.3
ग) प्रावधान और आकस्मिकताएं	18,261	1.2	23,605	1.4	30,400	1.5
3 परिचालन लाभ	29,837	1.9	40,682	2.4	52,671	2.7
4 निवल लाभ	11,576	0.8	17,077	1.0	22,271	1.1
5 अंतर (1क - 2क)	39,441	2.6	47,146	2.8	56,462	2.9

टिप्पणी : 2001-02, 2002-03 और 2003-04 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की संख्या क्रमशः 97 और 93 और 90 थी।
* भूतपूर्व आइसीआइसीआइ लि. द्वारा धारित आइसीआइसीआइ बैंक लि. के शेयरों पर लाभ शामिल है।

93 के 9 प्रतिशत से निरंतर बढ़कर 2003-04 में लगभग 21.6 प्रतिशत हो गया है (चार्ट III.6)। वर्ष 2003-04 के दौरान वृद्धिशील आधार पर 'अन्य आय' कुल आय का लगभग 71 प्रतिशत थी जो 2002-03 में 35.5 प्रतिशत थी।

3.50 'अन्य आय' की संरचना से पता चलता है कि फीस आय, निवेशों पर लेनदेन आय और विदेशी मुद्रा परिचालनों से कोषागार आय तथा विविध आय क्रमश : लगभग 30 प्रतिशत 49 प्रतिशत, 9 प्रतिशत और 12 प्रतिशत थी।। 'अन्य आय' श्रेणी के भीतर फीस आय का अंश घट गया है जबकि निवेश से लाभ (हानि) और विनिमय परिचालनों से लाभ सहित लेनदेन की आय का अंश कुछ वर्षों में बढ़ा है (चार्ट III.7)। यह उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि ब्याज आय की प्रवृत्ति पारंपरिक ब्याज आय की तुलना में अधिक अस्थिर है (बॉक्स III.6)।

व्यय

3.51 2003-04 के राजकोषीय वर्ष के दौरान अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के व्यय काफी सीमित पाये गये। 2003-04 में व्यय की 4 प्रतिशत की वृद्धि दर 2002-03 में स्थित 11.3 प्रतिशत वृद्धि दर की तुलना में काफी न्यून थी। अधिकांशतः ब्याज व्यय में आयी गिरावट के कारण हुई व्यय सीमितता का उक्त रिकार्ड सभी बैंक समूहों में पाया गया ब्याज व्यय में गिरावट अन्य बैंक समूहों की तुलना में विदेशी बैंकों के मामले में अधिक तीव्र थी।

चार्ट III.5: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की आय में उपचय के स्रोत

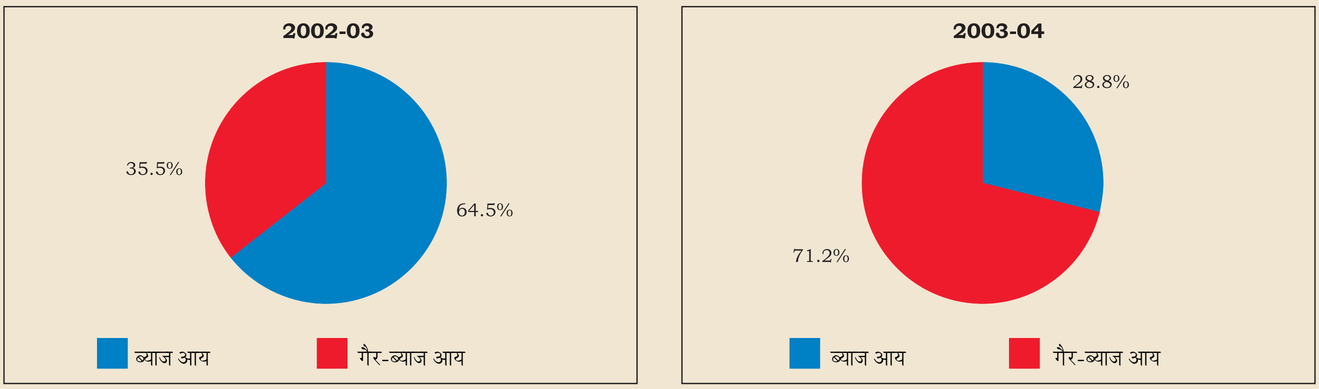

चार्ट III.6: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की ब्याज व गैर ब्याज की आय के भाग की प्रवृत्ति

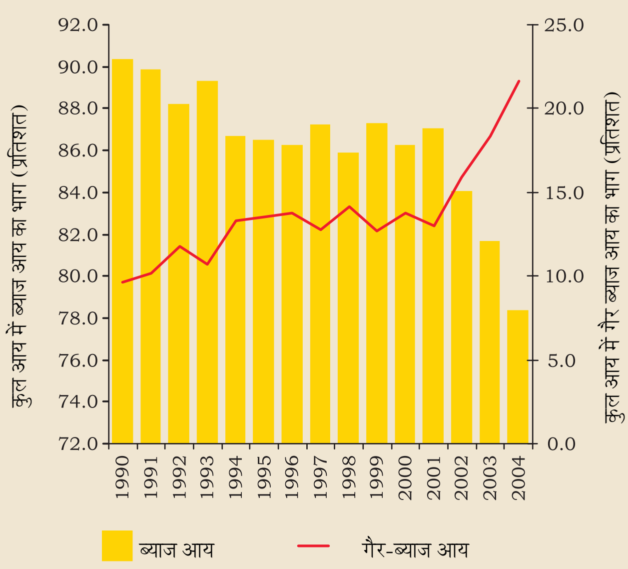

चार्ट III.7: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की गैर ब्याज आय का संयोजन

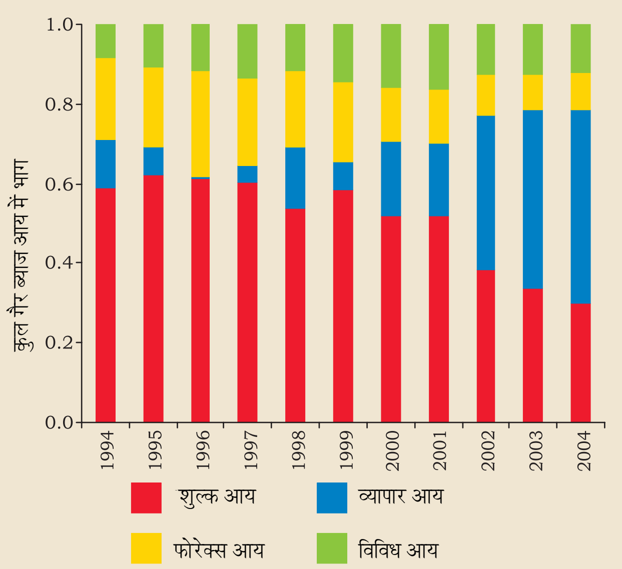

ब्याज व्यय

3.52 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के मामले में, जमाराशियों पर ब्याज व्यय 2003-04 के कुल व्यय का लगभग 54.2 प्रतिशत रहा जो 2002-03 की तुलना में 6 प्रतिशत अंक कम था। एससीबी की कुल आस्तियों के प्रति ब्याज व्यय का अनुपात 2002-03 के 5.5 प्रतिशत से गिरकर 2003-04 से 4.4 प्रतिशत रह गया। सरकारी क्षेत्र के बैंकों के लिए कुल आस्तियों के प्रति ब्याज व्यय का अनुपात 2002-03 के 5.4 प्रतिशत से गिरकर 2003-04 में 4.5 प्रतिशत रह गया। निजी क्षेत्र के नए बैंकों की आस्तियों के प्रति ब्याज व्यय का अनुपात 2002-03 के 6.4 प्रतिशत से गिरकर 2003-04 में 4.7 प्रतिशत रह गया जबकि निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के लिए यह 2002-03 के 6 प्रतिशत से गिरकर 2003-04 में 5 प्रतिशत रह गया।

परिचालन व्यय

3.53 मोटे तौर पर परिचालन व्यय में वेतन व्यय और वेतनेतर व्यय यथा, किराया कर, स्थापना व्यय, विज्ञापन, निदेशकों की फीस और भत्ते तथा विधि प्रभार। 2003-04 के दौरान, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के परिचालन व्यय बढ़कर 14.3 प्रतिशत हो गये जो 2002-03 में दर्ज वृद्धि दर से 1.2 प्रतिशत अंक अधिक थे। तथापि, 2003-04 में आस्तियों से संबंधित परिचालन व्यय की वृद्धि में स्थिरता पायी गयी क्योंकि आस्तियों की तुलना में परिचालन व्यय का अनुपात कमोबेश समान स्तर पर रहा, यद्यपि 2002-03 की तुलना में मामूली गिरावट हुई थी। बैंक समूहों में, आस्तियों की तुलना में परिचालन व्यय का अनुपात सरकारी क्षेत्र के बैंकों, निजी पुराने निजी बैंकों और विदेशी बैंकों के मामले गिरा परंतु नये निजी बैंकों के मामले में 2002-03 की तुलना में मामूली बढ़ा। 'विभिन्न देशों के परिदृश्य में' भारतीय बैंकों की तुलनात्मक दक्षता पायी गयी, क्योंकि भारतीय बैंकों के कुल व्यय की तुलना में परिचालन व्यय का 24-35 प्रतिशत के बीच रहा अनुपात 60 प्रतिशत के अंतर्राष्ट्रीय बेंचमार्क से काफी कम है।

वेतन बिल

3.54 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का वेतन बिल 2002-03 में हुई 8.4 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले 2003-04 में 10.8 प्रतिशत बढ़ा। तथापि, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के परिचालन व्यय में वेतन बिल का अंश 2002-03 के 62 प्रतिशत से घटकर 2003-04 में 60 प्रतिशत हो गया। बैंक समूहों में अधिक प्रौद्योगिकी गहन नए निजी और विदेशी बैंक के परिचालन व्यय में वेतन बिल का समानुपात पुराने निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक समूह की तुलना में कम था। 2003-04 में परिचालन व्यय में वेतन व्यय का हिस्सा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए सर्वाधिक 69 प्रतिशत तथा निजी क्षेत्र के पुराने बैंकों के लिए 59 प्रतिशत था। 2003-04 में निजी क्षेत्र के नये बैंकों और विदेशी बैंकों के परिचालन व्यय में वेतन व्यय का भाग क्रमशः 23.4 प्रतिशत और 32.1 प्रतिशत था।

बॉक्स III.6: बैंकों की आय का विशाखन और स्थिरता

पिछले दशक के दौरान बैंक धीरे-धीरे राजस्व के पारंपरिक स्रोतों जैसे ब्याज अर्जित करनेवाले ऋण और अग्रिम तथा निवेश गतिविधियों से हटकर विभिन्न गैर-पारंपरिक गैर ब्याज आय स्रोतों की ओर बढ़ रहे हैं जिनमें फीस आय, कमीशन और सेवाप्रभार निवेशों की बिक्री से निवल लाभ, विदेशी मुद्रा लेनदेनों से प्रतिलाभ और अन्य प्रकार की विभिन्न विविध प्राप्तियां शामिल हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और अधिकाधिक उदारीकृत वित्तीय क्षेत्र से बैंकों की गैर-ब्याज आय बढ़ने में सहायता मिली है। आय के गैर पारंपरिक स्रोतों का अधिकाधिक प्रमय लेने से बैंक न्यूनतर संविभाग जोखिम के रूप में विशाखीकृत प्रतिलाभ पा सके हैं। गैर-ब्याज आय भी संभवतः पारंपरिक ब्याज आय की तुलना में समग्र कारोबारी स्थितियों पर कम निर्भर रहेगी, ताकि गैर-ब्याज आय पर बढ़ती निर्भरता से बैंक लाभ और राजस्व में चक्रीय घट-बढ़ गिरावट हो जाए। कई गैर-ब्याज आय गतिविधियों से बैंक बढ़ते कारोबारी अवसरों के जरिए स्तरीय अर्थव्यवस्था के लाभ और क्षेत्र प्राप्त कर सकते हैं तथा परिचालन लागत घआ सकते हैं एवं ऐसी लागत को विभिन्न गतिविधियों के बीच प्रयुक्त कर सकते हैं। इस बात के होते हुए भी कि कई अध्ययनों में बैंकों की आय के बदलते विन्यास के कारण बैंकों की आय और लाभप्रदता की स्थिरता में कोई लक्षणीय सुधार हुआ है या नहीं इस पर चर्चाएं की जा चुकी है, युरोप और अमेरीकन बैंकों के अनुभवसिद्ध अध्ययनों से पता चलता है कि गैर-ब्याज आय पारंपरिक ब्याज आय की तुलना में काफी अस्थिर रही है। एप्लाइड पोर्टफोलियो विश्लेषण का प्रयोग करते हुए इन अध्ययनों से दर्शाया है कि ब्याज और गैर-ब्याज आय के बीच सकारात्मक सहसबंध के कारण कुल आय की अस्थिरता और बैंकों की लाभप्रदता कुछ वर्षों में बढ़ी है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बैंकों की कुल आय में गैर-ब्याज आय का अंश 1991-92 के 9 प्रतिशत से लगभग दुगुना बढ़कर 2003-04 में 22 प्रतिशत हो गया। बैंक समूहों के बीच सरकारी क्षेत्र के और निजी क्षेत्र के देशी बैंकों में गैर-ब्याज आय में तीव्र वृद्धि दर्ज हुई है। गैर-ब्याज आय के घटकों के रूप में, फीस और कमीशन से आय जो 1991-92 में विभिन्न बैंक समूहों के बीच कुल गैर-ब्याज आय का लगभग 70 से 97 प्रतिशत थी, 2003-04 में घटकर लगभग 25 से 30 प्रतिशत हो गयी। इसप्रकार निवेश बैंकिंग और कोषागार परिचालनों सहित गैर-ब्याज आय के अन्य घटकों में कुछ वर्षों में तेजी से वृद्धि परिलक्षित हुई है।

विभिन्न बैंक समूहों की आय की अस्थिरता और आय के घटकों के विश्लेषण में ज्ञात होता है कि 1993-2004 की अवधि के दौरान आस्तियों की तुलना में अनुपात की घट-बढ़ का गुणांक निजी बैंकों में उच्चतम था जिसके बाद विदेशी बैंकों, स्टेट बैंक समूह और राष्ट्रीयकृत बैंकों का स्थान था। आस्तियों की तुलना में ब्याज आय के अनुपात की घट-बढ़ का गुणांक राष्ट्रीयकृत बैंकों को छोड़कर सभी बैंक समूहों की आस्तियों की तुलना में गैर-ब्याज आय के अनुपात से उच्चतर है। तथापि, निवल ब्याज आय अनुपात की घट-बढ़ का गुणांक विदेशी बैंकों को छोड़कर सभी बैंक समूह के लिए गैर-ब्याज आय से उच्चतर था। निवल ब्याज आय और निवल गैर-ब्याज आय के बीच सह संबंध विदेशी बैंकों के मामले में नकारात्मक था परंतु देशी निजी बैंक समूह के मामले में उल्लेखनीय रूप से नकारात्मक था। दूसरी ओर, निवल-ब्याज आय और गैर ब्याज आय के बीच सहसंध भारतीय स्टेट बैंक समूह और राष्ट्रीयकृत बैंकों सहित सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में सहसंबंध उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक रहा।

सारणी : 1994-2004 के दौरान बैंकों की आय की घट-बढ़ के परिमाण

बैंक समूह	ब्याज आय-आस्ति अनुपात	निवल ब्याज आय-आस्ति अनुपात	गैर ब्याज आय-आस्ति अनुपात	ब्याज आय-और ब्याज आय-के बीच सहसंबंध	निवल ब्याज आय-और गैर ब्याज आय-के बीच सहसंबंध
स्टेट बैंक समूह	6.18	10.60	10.90	-0.25	0.40
राष्ट्रीय बैंक	5.73	13.98	10.87	-0.80	-0.01
भारतीय निजी बैंक	17.99	18.43	23.07	-0.19	0.10
विदेशी बैंक	7.10	9.66	46.01	-0.63	0.54
अनुसूचित वाणिज्य बैंक	6.10	11.18	11.29	-0.75	0.39

टिप्पणी : मानक परिवर्तन (प्रतिशत में) और सहसंबंध सह गुणक लॉगरिथम रुपांतरण आंकड़ा श्रृंखला पर आधारित है।

संदर्भ :

डेविस, ईपी और क्लाउस तोरी, दि चेंजिंग स्ट्रक्चर ऑफ बैंक्स इनकम एन एम्पिरिकल इन्वेस्टिगेशनड यूरोपियन सेंट्रल बैंक.

स्मिथ आर, और जी वूड, (2002) 'नॉन इंटरेस्ट इनकम एण्ड टोटल इनकम स्टेबिलिटि' बैंक ऑफ इंग्लैंड, वर्किंग पेपर सं.198

स्टिरो, के.जे. (2002) 'डाइवर्सिफिकेशन इन बैंकिंग : इज नॉन-इंटरेस्ट इनकम दि आन्सर' फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ न्यूयार्क, स्टाफ पेपर, सं.154

प्रावधान और आकस्मिकताएं

3.55 प्रावधान और आकस्मिकताओं शामिल प्रमुख मदें है ऋण हानियों के लिए प्रावधान, निवेश मूल्य में होनेवाले मूल्यह्रास के लिए प्रावधान और करों के लिए प्रावधान। हाल के वर्षों में प्रावधानों में हुई वृद्धि पर विभिन्न नीतिगत प्रोत्साहनों का प्रभाव रहा। 2002-03 के केंद्रीय बजट में अशोध्य और संदिग्ध ऋणों के लिए किये प्रावधान पर बैंकों द्वारा कटौती की अनुमत मात्रा उनकी कुल आय के 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.5 प्रतिशत कर दिया गया। 90 दिवसीय चूक मानदण्ड के प्रभाव के कारण प्रावधान और आकस्मिकता व्यय में 2002-03 में 28.8 प्रतिशत की वृद्धि से तुलना करने पर 2003-04 में 29.3 प्रतिशत की काफी उच्च वृद्धि प्रदर्शित हुई ।

परिचालन लाभ

3.56 वर्ष 2003-04 के दौरान अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की लाभप्रदता में सुदृढ़ वृद्धि दर की गति बनाये रही। 2003-04 में परिचालन लाभ जो लाभप्रदत्ता का संरचनात्मक उपाय है, 29.5 प्रतिशत बढ़ा जबकि 2002-03 में 36.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। बैंक समूहों में, सरकारी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों का परिचालन लाभ 2003-04 में क्रमशः 32.8 और 33.8 प्रतिशत बढ़ा। 2003-04 में निजी क्षेत्र के बैंकों के परिचालन लाभ में बढ़ोतरी की मात्रा 13.4 प्रतिशत पर अपेक्षाकृत कम थी जबकि 2002-03 में यह 55.7 प्रतिशत थी।

3.57 हाल में, भारतीय बैंकों के लिए कोषागार परिचालन प्रमुख लाभ केंद्र के रूप में उभरे हैं । फोरेक्स आय, हालांकि वह कोषागार आय के समान भारी नहीं है, फिर भी उसकी मार्जिनों पर दबाव तथा अंतर-बैंक दायरे में लायी जा रही कमी के बावजूद, हाल के वर्षों में बैंकों के परिचालन लाभों में उल्लेखनीय अंश रहा है (सारणी III.19, परिशिष्ट सारणी III.13)। एक बैंक समूहवार विश्लेषण यह संकेत देता है कि सक्षे बैंकों के लाभ का बड़ा अंश निवेश के कारण था वही निजी और विदेशी बैंकों का विदेशी मुद्रा लेनदेनों से प्राप्त लाभों में बड़ा अंश था।

निवल लाभ

3.58 2003-04 में अनुसूचित वाणिजय बैंकों का निवल लाभ 2002-03 की 47.5 प्रतिशत की वृद्धि के की तुलना में 30.4 प्रतिशत बढ़ा। बैंक समूहों में, निवल लाभ में बढ़ोतरी सरकारी क्षेत्र के बैंकों में 34.6 प्रतिशत की वृद्धि दर के साथ सर्वाधिक थी जिसके बाद विदेशी बैंकों, और भारतीय निजी बैंकों का स्थान था जिनमें क्रमशः 23 प्रतिशत और 18 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई (चार्ट III.8)। यह गैर-ब्याज आय में भारी प्रतिलाभ, विशेष रूप से, निवेशों के विक्रय/क्रय पर दर्ज लाभ के कारण था।

चार्ट III.8 : प्रमुख बैंकों के समूह का निवल लाभ

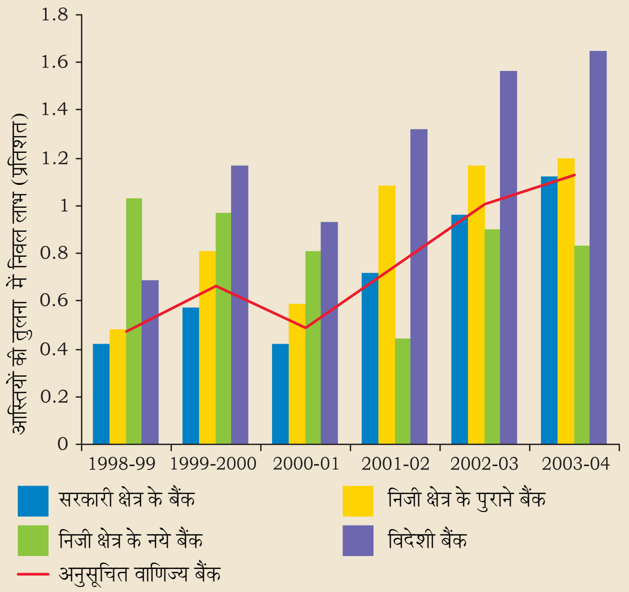

3.59 सरकारी क्षेत्र के बैंक समूह के भीतर एक को छोड़कर सभी बैंकों ने आधे प्रतिशत से अधिक लाभ प्रदता (कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में निवल लाभ) सूचित किया। वास्तव में 2003-04 में 26 पीएसबी ने 0.75 प्रतिशत की निवल लाभप्रदता दर्ज की जिसमें से 21 बैंकों ने एक प्रतिशत की निवल लाभप्रदता की सूचना की।

3.60 अंतर्राष्ट्रीय अनुभव बताते हैं कि 2003 में जर्मनी और जापान को छोड़कर प्रमुख देशों में बैंक लाभप्रदता उच्च थी। तथापि, देशों देशों में लाभप्रदता, लागत स्थिति और प्रावधानन के संबंध में हुई गतिविधियां भिन्न-भिन्न थी (सारणी III.20)। विभिन्न देशों के परिप्रेक्ष्य में भारत के बैंकिंग क्षेत्र की लाभप्रदता 1 प्रतिशत तथा उससे अधिक की लाभप्रदाता की उच्च श्रेणी में रहा।

सारणी III.19: प्रमुख (बड़ी) आय का बैंक समूहवार ब्यौरा

(करोड़ रुपये)

बैंक समूह	व्यापार आय		फोरेक्स आय		परिचालन लाभ	
	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04
1	2	3	4	5	6	7
अनुसूचित वाणिज्य बैंक	**13,211**	**19,532**	**2,824**	**3,754**	**40,682**	**52,671**
सरकारी क्षेत्र के बैंक	9,890	15,410	1,672	1,884	29,717	39,475
राष्ट्रीयकृत बैंक	7,215	10,482	1,035	1,192	18,486	25,111
स्टेट बैंक और उसका समूह	2,675	4,928	638	692	11,231	14,364
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	1,466	1,476	123	117	2,804	3,196
निजी क्षेत्र के नये बैंक	1,351	2,034	140	385	4,432	5,013
विदेशी बैंक	504	612	888	1,368	3,728	4,987

टिप्पणीयां : 1. व्यापार आय - निवेश की बिक्री पर निवल लाभ
2. फोरेक्स आय - विनिमय लेनदेनों पर निवल लाभ

सारणी III.20: प्रमुख बैंकों की लाभप्रदता

(कुल आस्तियों के प्रतिशत के रूप में)

देश	कर-पूर्व लाभ		प्रावधानीकरण व्यय		निवल ब्याज मार्जिन		परिचालन लागत	
	2002	2003	2002	2003	2002	2003	2002	2003
1	2	3	4	5	6	7	8	9
संयुक्त राज्य (11)	1.7	2.0	0.7	0.4	3.1	3.0	3.5	3.4
कनाड़ा (5)	0.6	1.0	0.6	0.2	2.1	2.0	2.8	2.8
जापान (11)	-0.5	0.1	0.6	0.2	1.0	0.6	1.0	0.8
ब्रिटेन (5)	1.1	1.2	0.4	0.3	2.0	1.8	2.2	2.1
स्वीडन (4)	0.7	0.8	0.1	0.1	1.5	1.4	1.4	1.4
जर्मनी (4)	0.1	-0.2	0.4	0.3	0.8	0.8	1.7	1.7
फ्रांस (3)	0.5	0.6	0.2	0.2	0.8	0.9	1.5	1.6
इटली (5)	0.5	0.8	0.6	0.5	2.3	2.1	2.4	2.5
स्पेन (3)	1.1	1.3	0.6	0.4	2.7	2.4	2.4	2.1
ज्ञापन :								
भारत *	0.8	1.0	1.2	1.4	2.6	2.8	2.2	2.2

* 2002 में 97 और 2003 में 93 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से संबंधित है। वित्त वर्ष अप्रैल-मार्च है। लाभ के आंकड़े निवल लाभ दर्शाते हैं।

टिप्पणी : 1. आंकड़े कुल आस्तियों के प्रतिशत हैं।

2. कोष्ठक के आंकड़े शामिल किये गये प्रमुख बैंकों की संख्या दर्शाते हैं

स्रोत : बी आइ एस वार्षिक रिपोर्ट (2004)

इक्विटी पर प्रतिलाभ

3.61 बैंकों के ईक्विटी संकेतर पर प्रतिलाभ से बैंक किस प्रकार शेयरधारियों के हित में कारोबार चलाते हैं इसकी जानकारी उपलब्ध होती है। बैंकिंग प्रणाली का इक्विटी पर प्रतिलाभ मार्च 2004 के अंत में अधिक अर्थात 19.8 प्रतिशत था जबकि मार्च 2003 के अंत में यह 16.9 प्रतिशत था (चार्ट III.9)। बैंकिंग उद्योग का उच्च स्तरीय इक्विटी पर प्रतिलाभ पूंजी आकष्रित करने के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है।

चार्ट III.9 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की इक्विटी पर प्रतिलाभ

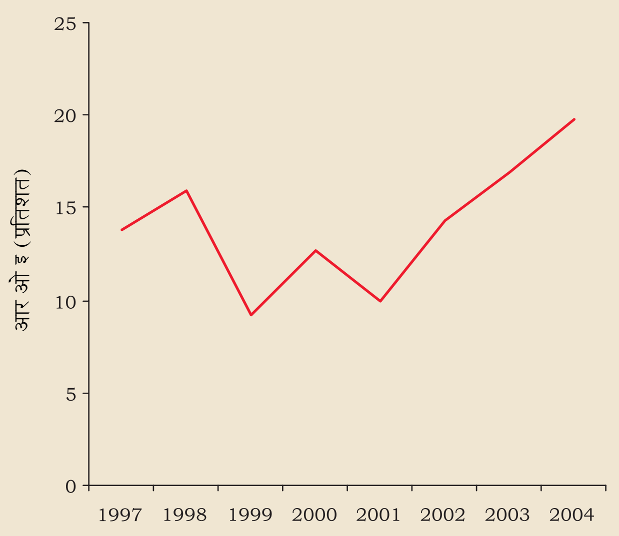

तथापि, पूंजी बाजार को काम में लाने में बैंकों की वास्तविक सफलता बाजार की स्थिरता ओर संवेदनक्षमता पर निर्भर होगी।

तुलन-पत्रेतर गतिविधियां

3.62 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की तुलनपत्रेतर गतिविधियों जिनमें फीस, कमीशन और दलाली, निवेशों की बिक्री/खरीद पर लाभ (हानि) और वायदा विनिमय करार, गारंटिया, स्वीकृतियां, और पृष्ठांकन में 2003-04 में 51.3 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि हुई। तदनुसार 2003-04 में कुल देयताओं के अनुसार तुलनपत्रेतर परिचालन बढ़कर 89.3 प्रतिशत हो गये जिनमें 2002-03 के मुकाबले 20 प्रतिशत अंकों की बढ़ोतर दर्ज हुई। इनमें से लगभग 65.5 अंश वायदा विनिमय संविदाओं का था। बैंक समूहों में विदेशी बैंक, विशेष रूप से तुलनपत्रेतर गतिविधियों में सक्रिय थे जिसके कि फलस्वरूप उनका कुल देयताओं की तुलना में तुलनपत्रेतर गतिविधि का अनुपात 2002-03 के 483 प्रतिशत से बढ़कर 2003-04 में 653 प्रतिशत हो गया (परिशिष्ट सारणी III.14)।

निधियों की लागत

3.63 हाल की अवधि में सामर्थ्यकारी व्यापक आर्थिक परिवेश में निधियों की कम लागत बैंकिंग क्षेत्र की एक उल्लेखनीय विशेषता रही है। 2003-04 में सभी बैंक समूहों के लिए निधियों की लागत 70-150 आधार अंक के दायरे में रही। 2003-04 में निधियों की लागत में कमी के साथ-साथ कमोबेश अग्रिमों पर आय में समान

सारणी III.21: निधियों और प्रतिलाभों की बैंक समूहवार लागत

(प्रतिशत)

परिवर्ती / बैंक समूह बैंक	सरकारी क्षेत्र बैंक		निजी क्षेत्र के पुराने बैंक		निजी क्षेत्र के नये बैंक		विदेशी	
	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04	2002-03	2003-04
1	2	3	4	5	6	7	8	9
निधियों की लागत	6.1	5.0	6.6	5.3	4.4	3.7	5.3	3.8
अग्रिमों पर प्रतिलाभ	9.0	7.9	9.7	8.8	10.3	8.8	10.3	8.3
निवेशों पर प्रतिलाभ	9.2	8.5	9.2	8.1	8.2	6.2	7.7	8.2

टिप्पणी : 1. निधियों की लागत = (जमाराशियों पर प्रदत्त ब्याज) उधारों के संबंध में अदा किया गया ब्याज) / (जमाराशियां + उधार)
2. अग्रिमों पर प्रतिलाभ = अग्रिमों पर अर्जित ब्याज / अग्रिम
3.निवेशों पर प्रतिलाभ = निवेश पर अर्जित आय / निवेश

कमी देखी गयी, जिसका निहितार्थ यह है कि वास्तविक अर्थव्यवस्था गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए कम ब्याज दर का लाभ रिसकर बैंक उधारकर्ताओं तक पहुंचा (सारणी III.21)।

दायरा

3.64 दायरा अथवा ब्याज आय और ब्याज व्यय के बीच के अंतर के रूप में परिभाषित निवल ब्याज आय बैंकों की दक्षता का एक महत्त्वूपर्ण संकेतक होता है, क्योंकि उससे जमाकर्ताओं को प्राप्त ब्याज और उधारकर्ताओं पर उनके ऋणों के लिए लगाया गया ब्याज के बीच अंतर (Wedge पच्चर) लाया जाता है। निवल ब्याज आय, अर्थात अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के दायरे में निरंतर वृद्धि दर्ज हुई, वह 2002-03 के 19.5 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले 2003-04 में 19.8 प्रतिशत बढ़ गया। अधिकांश बैंक समूहों ने दायरे में दो-अंकों में वृद्धि दर्ज की। निजी और विदेशी बैंकों के दायरों में वृद्धि सरकारी क्षेत्र के बैंकों की तुलना में तीव्रतर थी।

3.65 बैंक समूहों सार्वजनिक क्षेत्र (निजी क्षेत्र अंत विदेशी बैंक के विभिन्न बैंकों के विभिन्न बैंकों के वित्तीय मानदंड क्रमश: परिशिष्ट सारणी III.15 (क) से III.15 (ख),,परिशिष्ट सारणी III.16 (क) से 16 (ज) तथा परिशिष्ट सारणी III.17 (क) से III.17 (ज) में दिए गए है।

निवेश घट-बढ़ प्रारक्षित निधि

3.66 नीतिगत दृष्टिकोण के अनुरूप बैंकों ने 'निवेश घट-बढ़ प्रारक्षित निधि' (आइएफआर) निर्मित करने के प्रति अपने प्रयासों में तेजी लायी। मार्च 2004 के अंत में, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के मामले में आइएफआर अनुपात (बिक्री के लिए उपलब्ध (एएफएस) और व्यापार के लिए धारित श्रेणियों, दोनों को मिलाकर, के अधीन निवेश के प्रतिशत के रूप में परिभाषित आइएफआर) तेजी से बढ़ा और 2002-03 के 1.8 प्रतिशत के स्तर से 3 प्रतिशत पर पहुंच गया। आइएफआर निर्मित करने में सभी बैंक समूहों में प्रगति पायी गयी। तथापि, सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में प्रगति का रिकार्ड उच्चतम रहा है, इसके बाद विदेशी बैंकों और पुराने निजी बैंकों का स्थान था। नये निजी बैंक अन्य बैंक समूहों से पीछे रहे। जहां बैंकों से यह अपेक्षा की गयी थी कि वे 2007 तक अपने निवेशों के न्यूनतम पांच प्रतिशत का आइएफआर संविभाग निर्मित करें, वहीं यह देखा गया कि सरकारी क्षेत्र के बैंक समूह के भीतर तीन बैंकों ने यह लक्ष्य पहले ही पूरा कर लिया है और 20 बैंकों ने पहले ही 3.0 प्रतिशत या अधिक का आइएफआर अनुपात निर्मित कर लिया है, संभवतः यह प्रतिकूल ब्याज दर घट-बढ़ से अपने निवेश संविभागों को कुशन प्रदान करने के प्रति उनकी चिंता का परिचायक है (सारणी III.22 और परिशिष्ट सारणी III.18)।

सारणी III.22: बैंक समूहवार निवेश घट-बढ़ प्रारक्षित निधि (आइएफआर)

(मार्च 2004 के अंत में)

(राशि करोड़ रुपये में)

बैंक समूह	निवेश		आइएफ आर	आ एफ आर/ (एएफएस + एचएफटी) (प्रतिशत)
	बिक्री के लिए धारित (एएफएस)	व्यापार हेतु धारित (एचएफटी)		
1	2	3	4	5=4/ (3+2)
अनुसूचित वाणिज्य बैंक	**6,18,794**	**20,433**	**18,920**	**3.0**
सरकारी क्षेत्र के बैंक	4,87,876	5,503	15,192	3.1
राष्ट्रीयकृत बैंक	2,84,441	3,411	8,825	3.1
स्टेट बैंक समूह	2,03,436	2,091	6,368	3.1
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	38,178	1,248	1,108	2.8
निजी क्षेत्र के नये बैंक	62,401	5,557	1,561	2.3
विदेशी बैंक	30,339	8,126	1,059	2.8

4. गैर-निष्पादक आस्तियां

3.67 बैंकों की आस्ति गुणवत्ता, ऋण जोखिम मूल्यांकन, तथा उत्पादक क्षेत्रों को संसाधनों के आबंटन में कार्यक्षमता का आकलन करने के लिए ऋण के गैर-निष्पादक स्तर को महत्त्वपूर्ण संकेतक के रूप में माना जाता है। वित्तीय क्षेत्र सुधार की विशेषतः विनियामक और पर्यवेक्षी प्रक्रिया में हुई सफलता का संकेत देते हुए बैंकों ने अपने तुलन पत्र से गैर-निष्पादक आस्तियों को घटाने में काफी प्रगति की है (बाक्स III.7)।

बाक्स III.7: भारतीय बैंकों के गैर-निष्पादक ऋणों के निर्धारक तत्व

आमधारणा यह है कि अर्थव्यवस्था की संरचनागत रूपरेखा से बैंकों के गैर-निष्पादक ऋण प्रभावित होते हैं। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों के कारण भारत के वित्तीय बाजार की संरचनागत रूपरेखा में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। ऋण बाजार में सरकारी हस्तक्षेप में उल्लेखनीय कमी आयी है। मौद्रिक प्रबंध में प्रत्यक्ष लिखत के बजाय अप्रत्यक्ष लिखत पर बल दिया जा रहा है। सीआरआर और एसएलआर कम करके बैंक निधियों के सांविधिक अग्रक्रय में कमी आयी है। ब्याज दरों को विनियामित किया गया है ताकि मूल्य निर्धारण और पोषक बाजार प्रणाली सरल हो सके। बैंकों को उधार देने की दर निर्धारित करने की स्वतंत्रता दी गयी है। सूचना प्रौद्योगिकी में तेजी-से हुई प्रगति के कारण लेनदेन की लागत में उल्लेखनीय कमी आयी है, तथा संविभाग के विशाखीकरण में सुविधा हुई है एवं बैंकों के ऋण वितरण में सुधार आया है। बैंकों की कार्यक्षमता का संवर्धन करने और उसे बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विवेकपूर्ण मानदण्ड लागू किये गये हैं। ऋण वसूली, आस्ति पुनर्निर्माण और प्रतिभूतिकरण के क्षेत्र में किये गये कई उपायों से संस्था के गठन की प्रक्रिया को मजबूत किया गया है और इसके अतिरिक्त बैंकों के पूंजी आधार को बढ़ाने के लिए पुनर्पूंजीकरण और गैर-निष्पादक आस्तियों के एक-बारगी निपटान के लिए प्रस्ताव के माध्यम से विशेष पहल भी की गयी हैं। एसएआरएफएएसईएसआइ अधिनियम और कंपनी ऋण पुनर्व्यवस्थापन के कार्यान्वयन से गैर-निष्पादक आस्तियों के प्रस्ताव में सरलता आ गयी है।

भारतीय संदर्भ में, अध्ययनों ने यह दिखाया है कि एनपीए के दो घटक होते हैं: टंगा हुआ घटक और बढ़ता हुआ घटक (जालान 2002, मुनिअप्पन, 2002)। टंगा हुआ घटक ढांचागत और संस्थागत वातावरण की दुर्बलता से उत्पन्न होता है जबकि बढ़ता हुआ घटक बैंक के प्रबंधन और ऋण स्वरूप जैसे आंतरिक कारणों से उत्पन्न होता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गये विभिन्न अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि आवश्यक शर्त की तरह समर्थक नीतिगत परिवेश और संस्थागत बुनियादी सुविधा होने के अलावा गैर-निष्पादक आस्तियों पर निशाना साधने के लिए पर्याप्त माहौल बनाने के लिए बैंकों की उधार देने की नीति का उपयुक्त होना आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में, कई अध्ययनों ने ऐसे घटकों की पहचान की है जो बैंकों की गैर-निष्पादक आस्तियों पर प्रभाव डालते हैं। कुछ ने ऐसा तर्क दिया है कि गैर-निष्पादक आस्तियों की समस्या केवल कारोबारी चक्र के कारण और ऐसे अप्रत्याशित आघातों जैसे उत्पादक फर्मों की कारोबारी असफलता एवं विभिन्न आपदाओं के कारण गतिविधियों में आये व्यवधान से जनित दुर्भाग्यवश गैर-निष्पादक आस्तियों की समस्या होती है। अन्य दृष्टिकोण यह है कि बैंकों द्वारा किये जानेवाले गलत प्रबंधन से गैर-निष्पादक आस्तियों की समस्या होती है (केप्रिओ, ईटी, एएल, 2000)। बाद के दृष्टिकोण के अनुसार वृद्धिशील रूप से प्रतिस्पर्धात्मक वित्तीय बाजार में आर्थिक घटक बैंक के गैर-निष्पादक ऋणों पर प्रभाव डालनेवाले महत्त्वपूर्ण घटकों के रूप में उभरे हैं। इस संदर्भ में रेड्डी (2004), मोहन (2003, 2004), (सर्गिओ, 1996, मैकगोवन, 1993, क्रिसटिन 1995, ब्लोएम और गोर्टव्र 2001) सहित विभिन्न अध्ययनों में बैंकों के गैर-निष्पादक ऋणों की गतिविधि पर प्रभाव ड़ालने में सामान्य रूप में बैंकों की उधार देने की नीति और लागत, परिपक्वता एवं जमानत सहित अन्य बातों के साथ-साथ परिभाषित ऋण की शर्तों को अधोरेखित किया है। भारतीय संदर्भ में, 1993-2003 की अवधि के दौरान अग्रिमों के प्रति बैंकों की सकल गैर-निष्पादक ऋण अनुपात उधार देने की शर्तों में उल्लेखनीय सुधार के साथ लगभग 24-25 प्रतिशत से घटकर 7-8 प्रतिशत हो गया। पिछले दस वर्षों के दौरान अग्रिमों के प्रति सकल गैर-निष्पादक आस्ति अनुपात और परिपक्वता (कुल अग्रिमों में मीयादी ऋण का अंश) सहित ऋण परिवर्ती संबंधी शर्तें, जमाराशियों की ब्याज लागत, आस्ति अनुपात के प्रति परिचालनगत व्यय आस्ति अनुपात के प्रति कुल व्यय एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का ऋण-जमा अनुपात इनकी तुलनात्मक स्थिति ने उपयुक्त अन्तर्दृष्टी दी है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक समूह के लिए ऐसा प्रमाण है कि सकल गैर-निष्पादक आस्ति अनुपात 1993 के 23 प्रतिशत से घटकर 2003 में 9 प्रतिशत हो गया । 1993-2003 की अवधि के दौरान बैंकों की मूल उधार ब्याज दर 500-750 आधार अंकों की गिरावट आ गयी। अग्रिमों के प्रति मीयादी ऋण अनुपात के अनुसार यथा परिभाषित ऋणों की परिपक्वता शर्तों में सुधार आकर वह 30 प्रतिशत से लगभग 40 प्रतिशत हो गया। ऋण-जमा अनुपात के अनुसार की गयी गणना पर बैंकों के ऋण-अभिविन्यास में हाल के वर्षों में सुधार आया है जबकि 1993-99 की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आ गयी थी। जमानती ऋणों का अनुपात उच्च स्तर पर बना रहा जिससे जोखिम प्रबंध के प्रति बैंक के दृष्टिकोण में स्थिरता का संकेत मिलता है। इसके अलावा, बैंक के आकार में निहित जोखिम तत्व मजबूत तुलन पत्र के साथ सीमित रह गया। राजारामन और वशिष्ठ (2002) द्वारा किये गये प्रायोगिक अध्ययन में भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के परिचालनगत अदक्षता संकेतक और समस्यामूलक ऋणों के बीच होनेवाले उल्लेखनीय आपसी (द्वि-विचर) संबंध के प्रमाण दिये गये हैं। दास और घोष (2003) ने आस्ति मात्रा, ऋण वृद्धि और समष्टि आर्थिक स्थिति, तथा परिचालनगत दक्षता संकेतक जैसे विभिन्न संकेतकों के संबंध में भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के गैर-निष्पादक ऋणों का अनुभवजन्य विश्लेषण किया है। अनुभवजन्य विश्लेषण यह दर्शाता है कि नीतिगत परिवेश को समर्थन देने के अलावा बैंकों को चाहिए कि वे अन्य घटकों के साथ-साथ ऋण की लागत, निधियों की लागत, ऋणों की परिपक्वता, ऋण अभिविन्यास को ध्यान में लेते हुए उधार देने की यथोचित शर्तें निर्धारित करें ताकि उधारकर्ताओं के संबंध में बकाया में कमी आये।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको की गैर निष्पादक आस्तियां और ऋण की शर्तें

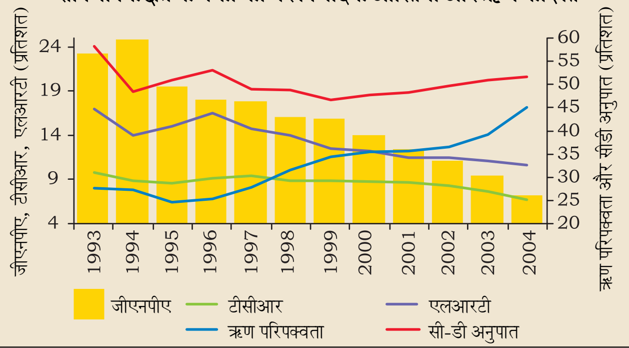

टिप्पणी : जीएनपीए : बैंकों के सकल अग्रिमों के प्रति सकल गैर-निष्पादक आस्ति अनुपात; आरसी : जमा की ब्याज लागत प्रतिशत में; ओ सीआर : बैंकों की आस्तियों के प्रति परिचालनगत लागत का अनुपात; टी सीआर : बैंकों की आस्तियों के प्रति कुल लागत का अनुपात; परिपक्वता : कुल ऋणों में मीयादी ऋणों का अंश ।

संदर्भ :

एम.जी.भिडे, ए. प्रसाद और एस.घोष, (2002), 'बैंकिंग सेक्टर रिफार्मस : ए क्रिटिकल ओवरव्यू', इकोनामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, फरवरी 2

गेरार्ड केप्रिओ ज्यू. और डेनियल क्लिंग बिल (1996), 'बैंक इनसोलवन्सी : बैड लक, बैड पालिसी, या बैड बैंकिंग विकास अर्थव्यवस्थाओं संबंधी वार्षिक विश्व बैंक सम्मेलन 1996, पालिसी रीसर्च वर्किंग पेपर, 1620, विश्व बैंक

ए. दास और एस. घोष, (2003), 'डीटर्मिनन्टस आफ क्रेडिट रिस्कट, नॉटिंघम ट्रेन्ट यूनिवर्सिटी में नवम्बर 2003 में मनी, रिस्क एण्ड इन्वेस्टमेंट' पर आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत पेपर

फंटेस और कार्लोस मैक्वैरा (2003), 'इन्स्टिट्यिूशनल एरेंजमेटस, क्रेडिट मार्केट डेवलपमेंट एण्ड लोन रीपेमेन्ट इन चीली,' स्कूल आफ बिजनूस एण्ड इकोनामिक्स, यूनिवर्सिटी दी चीली राकेश मोहन (2003), ञ्भारतीय बैंकिंग का रुपांतरण : बेहतर भविष्य की खोज में, ठभारतीय रिजव बैंक, भाषण, भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, जनवरी।

राकेश मोहन (2004), 'औद्योगिक वृद्धि के लिए वित्त', भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, मार्च

जी. मुनीअप्पन (2002), 'गैर-निष्पादक आस्तियों की स्थिति', भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन

वाई.वी. रेड्डी (2004), 'ऋण नीति, प्रणाली और संस्कृति', भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, भाषण, मार्च

एम. सर्गिओ (1996), 'नान-परफार्मिंग बैंक लोन्स : साइक्लिकल पेटर्न्स एण्ड सेक्टरल रिस्क', रिव्यू आफ इकोनामिक कंडिशन्स इन इटली, रोम : जनवरी-जून 1996, इश्यू 1.

3.68 2003-04 में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ था। मार्च 2004 से 90 दिवसीय चूक मानदण्डों को अपनाने के बावजूद, अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल एनपीए में समग्र दृष्टि से लगातार दूसरे वर्ष में गिरावट आयी। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल एनपीए में 2002-03 की 3.0 प्रतिशत गिरावट की तुलना में 2003-04 में 5.6 प्रतिशत गिरावट आयी। पर्याप्त प्रावधानीकरण के कारण, निवल एनपीए में 2003-04 के दौरान 24.7 प्रतिशत की भारी गिरावट आयी (सारणी III.23 से III.26)। एनपीए में गिरावट सभी बैंक समूहों में देखी गई। अग्रिमों/आस्तियों से प्रतिशत के रूप में बैंक वार कुल/निवल एनपीए की स्थिति परिशिष्ट III.19 (क) से 19 (च) में दी गई है। 2003-04 के दौरान, सामान्य रूप से, एनपीए खाते में जोड़ को गिरावट ने पीछे छोड़ दिया। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के लिए, सकल एनपीए में गिरावट के साथ-साथ संदिग्ध और हानि आस्तियों में क्रमशः 8.8 प्रतिशत और 15.0 प्रतिशत की गिरावट भी रही।

3.69 अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के निवल अग्रिमों के प्रति निवल-गैर-निष्पादक आस्तियों के अनुपात में गिरावट आयी और 2002-03 के 4.4 प्रतिशत से घटकर 2003-04 में 2.9 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2003-04 में सभी बैंक समूहों में निवल अग्रिमों के प्रति निवल गैर-निष्पादक आस्तियों के अनुपात में गिरावट आ गयी। बैंक समूहों में पुराने निजी बैंकों का निवल गैर-निष्पादक आस्ति अनुपात सबसे उच्चतम अर्थात 3.8 प्रतिशत था और उसके बाद सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, नये निजी बैंक और विदेशी बैंकों का स्थान रहा।

क्षेत्र-वार गैर-निष्पादक आस्तियां

3.70 अलग-अलग सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों की क्षेत्र-वार गैर-निष्पादक आस्तियां परिशिष्ट III.20(अ) और III.20(आ) में दी गयी हैं। वर्ष 2003-04 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कुल गैर-निष्पादक आस्तियों के प्रति प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र में गैर-

सारणी III.23: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की बैंक समूह वार सकल तथा निवल गैर-निष्पादक आस्तियाँ

(मार्च के अंत में)

(राशि करोड़ रुपये में)

बैंक समूह / वर्ष	सकल अग्रिम	सकल गैर-निष्पादक आस्तियां			निवल अगिम	निवल गैर-निष्पादक आस्तियां		
		राशि	सकल अग्रिमों से प्रतिशत	कुल आस्तियों से अग्रिमों		राशि	निवल अग्रिमों से प्रतिशत	कुल आस्तियों से प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7	8	9
अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक								
2001	5,58,766	63,741	11.4	4.9	5,26,328	32,461	6.2	2.5
2002	6,80,958	70,861	10.4	4.6	6,45,859	35,554	5.5	2.3
2003	7,78,043	68,717	8.8	4.0	7,40,473	32,671	4.4	1.9
2004	9,02,026	64,786	7.2	3.3	8,62,643	24,617	2.9	1.2
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक								
2001	4,42,134	54,672	12.4	5.3	4,15,207	27,977	6.7	2.7
2002	5,09,368	56,473	11.1	4.9	4,80,681	27,958	5.8	2.4
2003	5,77,813	54,090	9.4	4.2	5,49,351	24,867	4.5	1.9
2004	6,61,975	51,538	7.8	3.5	6,31,383	18,860	3.0	1.3
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक								
2001	39,738	4,346	10.9	5.1	37,973	2,771	7.3	3.3
2002	44,057	4,851	11.0	5.2	42,286	3,013	7.1	3.2
2003	51,329	4,550	8.9	4.3	49,436	2,740	5.5	2.6
2004	57,908	4,392	7.6	3.6	55,648	2,140	3.8	1.8
निजी क्षेत्र के नये बैंक								
2001	31,499	1,617	5.1	2.1	30,086	929	3.1	1.2
2002	76,901	6,811	8.9	3.9	74,187	3,663	4.9	2.1
2003	94,718	7,232	7.6	3.8	89,515	4,142	4.6	2.2
2004	1,19,511	5,963	5.0	2.4	1,15,106	2,717	2.4	1.1
भारत में विदेशी बैंक								
2001	45,395	3,106	6.8	3.0	43,063	785	1.8	0.8
2002	50,631	2,726	5.4	2.4	48,705	920	1.9	0.8
2003	54,184	2,845	5.3	2.4	52,171	921	1.8	0.8
2004	62,632	2,894	4.6	2.1	60,506	900	1.5	0.7

टिप्पणी : आंकड़ों को पूर्णांकित करने के कारण घटक मद कुल योग की वृद्धि नहीं करती।
स्रोत : 1. संबंधित बैंकों का तुलन पत्र।
2. संबंधित बैंकों द्वारा प्रस्तुत विवरणियां।

सारणी III.24: गैर-निष्पादक आस्तियों में बैंक समूह-वार उतार-चढ़ाव 2003-04

(राशि करोड़ रुपये में)

विवरण	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (90)	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (27)	निजी क्षेत्र के पुराने बैंक (20)	निजी क्षेत्र के नये बैंक (10)	विदेशी बैंक (33)
1	2	3	4	5	6
सकल गैर-निष्पादक आस्तियाँ					
मार्च 2003 के अंत में	68,698	54,090	4,291	7,492	2,826
वर्ष के दौरान वृद्धि	24,122	18,133	1,417	3,311	1,261
वर्ष के दौरान कमी	28,034	20,685	1,316	4,840	1,193
मार्च 2004 के अंत में	64,786	51,538	4,392	5,963	2,894
निवल गैर-निष्पादक आस्तियां					
मार्च 2003 के अंत में	32,657	24,867	2,547	4,335	907
मार्च 2004 के अंत में	24,617	18,860	2,140	2,717	900
ज्ञापन :					
सकल अग्रिम	9,02,026	6,61,975	57,908	1,19,511	62,632
निवल अग्रिम	8,61,643	6,31,383	55,648	1,15,106	60,506
अनुपात :					
सकल गैर-निष्पादक आस्तियाँ/सकल अग्रिम	7.2	7.8	7.6	5.0	4.6
निवल गैर-निष्पादक आस्तियाँ/निवल अग्रिम	2.9	3.0	3.8	2.4	1.5

नोट : 1. कोष्ठक में दिए गए आँकड़े वर्ष 2003-04 के लिए उस श्रेणी में बैंकों की संख्या को दर्शाते है।
2. सकल और निवल अग्रिमों के आंकड़ो में आइएनजी बैंक शामिल नहीं है।

स्रोत : संबंधित बैंकों का तुल.न-पत्र।

निष्पादक आस्तियों के अंश में सीमांत रूप से वृद्धि हो गयी। तथापि, कृषि और लघु उद्योग क्षेत्र की गैर-निष्पादक आस्तियों के अंश में गिरावट आयी परंतु अन्य प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र के अंश में वृद्धि हो गयी। वर्ष 2003-04 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के संबंध में गैर-निष्पादक आस्तियों के अंश में गिरावट आयी जबकि गैर-प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्रों की गैर-निष्पादक आस्तियों के अंश में वृद्धि

सारणी III.25: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ऋण आस्तियों का वर्गीकरण बैंक समूहवार

(राशि करोड़ रुपये में)

वर्ष / बैंक समूह	मानक आस्तियाँ		अवमानक आस्तियाँ		संदिग्ध आस्तियाँ		हानि आस्तियाँ		कुल गैर-निष्पादक		कुल आस्तियाँ
	राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत	राशि
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक											
2001	4,94,716	88.6	18,206	3.3	37,756	6.8	8,001	1.4	63,963	11.4	5,58,679
2002	6,09,972	89.6	21,382	3.1	41,201	6.1	8,370	1.2	70,953	10.4	6,80,925
2003	7,09,260	91.2	20,078	2.6	39,731	5.1	8,971	1.2	68,780	8.8	7,78,040
2004	8,37,130	92.8	21,026	2.3	36,247	4.0	7,625	0.8	64,898	7.2	9,02,027
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक											
2001	3,87,360	87.6	14,745	3.3	33,485	7.6	6,544	1.5	54,774	12.4	4,42,134
2002	4,52,862	88.9	15,788	3.1	33,658	6.6	7,061	1.4	56,507	11.1	5,09,369
2003	5,23,724	90.6	14,909	2.6	32,340	5.6	6,840	1.2	54,089	9.4	5,77,813
2004	6,10,435	92.2	16,909	2.6	28,756	4.3	5,876	0.9	51,541	7.8	6,61,975
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक											
2001	35,166	88.7	1,622	4.1	2,449	6.2	413	1.0	4,484	11.3	39,650
2002	39,262	89.0	1,834	4.2	2,668	6.0	348	0.8	4,850	11.0	44,112
2003	46,761	91.1	1,474	2.9	2,772	5.4	321	0.6	4,567	8.9	51,328
2004	53,516	92.4	1,161	2.0	2,727	4.7	504	0.9	4,392	7.6	57,908
निजी क्षेत्र के नये बैंक											
2001	29,905	94.9	963	3.1	620	2.0	11	0.0	1,594	5.1	31,499
2002	70,010	91.1	2,904	3.8	3,871	5.0	41	0.1	6,816	8.9	76,826
2003	87,487	92.4	2,700	2.9	3,675	3.9	856	0.9	7,231	7.6	94,718
2004	1,13,560	95.0	1,966	1.6	3,665	3.1	321	0.3	5,952	5.0	1,19,512
भारत में विदेशी बैंक											
2001	42,285	93.1	876	1.9	1,202	2.6	1,033	2.3	3,111	6.9	45,396
2002	47,838	94.5	856	1.7	1,004	2.0	920	1.8	2,780	5.5	50,618
2003	51,288	94.7	995	1.8	944	1.7	954	1.8	2,893	5.3	54,181
2004	59,619	95.2	990	1.6	1,099	1.8	924	1.5	3,013	4.8	62,632